# अध्याय 28

| 1. | **प्रार्थना** |
|---|---|

***समूह अगुवा.*** प्रार्थना के साथ अपने समूह, शिष्यों का निर्माण करने वाले इस पाठयक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौपें।

| 2. | **बाँटना** (20मिनट) *[ शान्त समय ]*<br>**उत्पत्ति 16:1-19:29** |
|---|---|

***आगे बढ़कर*** (या अपने नोट्स में से **पाढ़ें**) संक्षेप में ***बताएं*** कि आपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (उत्पत्ति 16:1-9:29)से क्या सीखा।
अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुने, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

| 3. | **याद करना** (20मिनट) *[ सुसमाचार ]*<br>**पाप का दण्ड : सभोपदेशक 12:14** |
|---|---|

## क-ध्यान करना

सभोपदेशक 12:1,5-7,13-14 **पढ़ें।** " अपनी जवानी के दिनों में अपने सृजनहार को स्मरण रख, इससे पहले कि विपत्ति के दिन और वे वर्ष आएं, जिन में तू कहे कि मेरा मन इन में नहीं लगता"..."क्योंकि मनुष्य अपने सदा के घर को जाएगा- चाँदी के तार के दो टुकड़े हो जाने से पहले उसे याद .....तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी, और आत्मा परमेश्वर के पास जिस ने उसे दिया लाहुट जाएगी। .... सब कुछ सुना गया, अन्त की बात यह है, कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य यही है कि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भलीं हो या बुरी न्याय करेगा।

निम्नलिखित याद करने वाले को वचन को श्वेत/श्याम पट पर लिखें

| पाप का दण्ड<br>सभोपदेशक 12:14 |
|---|
| क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भलीं हो या बुरी न्याय करेगा।<br>सभोपदेशक 12:14 |

अपने कार्ड के पीछे बाइबल के पद लिखें:

परमेश्वर दो तरीकों से पापों को दण्ड देता है:

### 1. परमेश्वर वर्तमान न्याय के द्वारा पापों को दण्ड देता है।

गलातियों6:7-8 पढ़ें "धोखा न खाओं परमेश्वर ठट्टों में नहीं उड़ाया जाता क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा। क्योंकि जो अपने शरीर के लिए बोता है वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा...."

परमेश्वर ने अपनी सृष्टि के नियम बनाये हैं। यदि उनका उल्लंघन किया जाये तो परिणाम दण्ड होता है। उदाहरण के तौर पर आप यदि धरती के गुरूत्वाकर्षण नियम का पालन नहीं करते हैं तो आप कहीं पर बुरी तरह से गिर पड़ेगें।

इसी प्रकार से परमेश्वर ने मनुष्यों के लिए आत्मिक व नैतिक नियम बनाएं हैं। आइये मनुष्यों द्वारा परमेश्वर के इन नियमों का उल्लंघन करना तथा इनके परिणाम देखें। जब लोग धरती तथा इसमें पायी जाने वाली प्राकृतिक चीज़ों की परवाह नहीं करते तो

परमेश्वर हवा और पानो भूमि को दूषित होने की अनुमति प्रदान कर देते हैं, जिसकी वजह से बहुत सी बीमारियां सामने आती हैं। लोग जब आलसी बनकर कोई काम नहीं करते, तो परमेश्वर उन्हें गरीब या भूखा होने देते हैं। जब लोग एक दूसरे से नफरत करते या आपस में झगड़ते है तो परमेश्वर उन्हें एक दूसरे का नाश करने की अनुमति प्रदान करते हैं। इस प्रकार की बहुत सी घटनाओं में परिणाम का सम्बन्ध मनुष्य के पापों से जुड़ा होता है। लोग पाप बोते हैं और परमेश्वर उन्हें पाप का परिणाम काटने की अनुमति प्रदान करते हैं। परमेश्वर का न्याय उसकी सृष्टि के नियमों के काम करने पर आधारित हैं। कोई भी परमेश्वर के बनाये नियमों का उल्लंघन करके बच नहीं सकता है। ज्यादातर लोगों के जीवन के किसी न किसी क्षण में वह अपने न्याय को जाहिर कर देता है।

### 2. परमेश्वर लोगों के पापों का दण्ड भविष्य में होने वाले निर्णायक न्याय के द्वारा देता है।

इब्रानियों 9:27 **पढ़ें।** "मनुष्यों के लिए एक बार मरना और फिर न्याय का होना नियुक्त है"

बाइबल बताती है कि मृत्यु अन्त नहीं है। मृत्यु के बाद भी अन्तिम व निर्णायक न्याय का होना बाकि है। मानवीय इतिहास के अन्त में यीशु मसीह इस संसार में वापस आकर धरती में बरे सारे लोगों का न्याय करेंगे। इस दिन को हम न्याय के दिन के नाम से जानते हैं। यीशु मसीह आकर मसीहियों को गैर मसीहियों से अलग करेगें।

**गैर मसीहियों का न्याय होगा**

उनकी सारी गलतियों का न्याय होगा(मत्ती 25:41-46)। उनके द्वारा की गयी सारी बुराईयों के लिए उनका न्याय किया जाएगा(सभोपदेशक 12:14)। वे अपने अविश्वास व यीशु को अस्वीकार करने की वजह से न्याय का सामना करेगें( यूहन्ना 3: 18,36)! वे परमेश्वर से अनजान रहने तथा सुसमाचार को न मानने की वजह से न्याय का सामना करेगें(2 थिस्लुनिकियों 1:8-9)। उनके पास दुबारा बचने का मौका नहीं होगा। उन्हें जीवित परमेश्वर की उपस्थिति से बाहर निकाल दिया जाएगा और वे फिर कभी परमेश्वर की दया व भलाई का अनुभव नहीं करेंगे, बल्कि उन पर केवल परमेश्वर का कहर ही जाहिर होगा। उन पर अनन्त दण्डाज्ञा होगी अर्थात उन्हें नरक कुण्ड में डाल दिया जाएगा(मत्ती 25:41; प्रकाशितवाक्य 21:8)!

**मसीहियों का न्याय होगा**

मसीहियों का जीवन जीने के तरीके के आधार पर न्याय होगा( 2 कुरिन्थियों 5:10; 1 कुरिन्थ्यिों 3:10-15)। हालांकि उन्हें अन्त विनाश का सामना नहीं करना पड़ेगा, क्योंकि वे मसीह पर विश्वास करने के द्वारा मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुके हैं(यूहन्ना 5:24)। जो यीशु मसीह में हे उन पर कोई दण्ड की आज्ञा नहीं है(रोमियों 8:1)।

---

## ख. याद करना व अवलोकन करना

1) एक खाली कार्ड या अपनी कॉपी के एक पेपर पर बाइबल की आयत को ***लिखें।***
2) सही तरीके से बाइबल के वचनों को ***याद करें।*** पाप का स्वभाव: सभोपदेशक 12:14
3) ***पुन: अवलोकन!*** दो दो के जोड़े में बटकर, एक दूसरे के द्वारा कि गयी पिछली आयत का मूल्यांकन करें।

| 4 | **बाइबल अध्ययन** (70मिनट) *[कलीसिया]*<br>**कलीसिया का प्रचारकीय कर्तव्य: प्रेरितों के काम 5:12-42** |
|---|---|

बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों का इस्तेमाल करते हुए प्रेरितों के काम 5:12-42 तक का एक साथ मिलकर अध्ययन करें।

**कदम 1. पढ़ें।** **परमेश्वर का वचन**

**पढ़ें।** आइये हम मिलकर प्रेरितों के काम 5:12-42 को एक साथ पढ़ें।
आइये हम बारी-बारी से निर्धारित सभी वचनों को पढ़ें।

---

## कदम 2 खोजें निरीक्षण

***ध्यान दें।*** **इस अनुच्छेद में कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?**
**या इस अनुच्छेद के किस सत्य ने आपके हृदय या मन को छुआ?**
***लेखा रखें।*** एक या दो बातों की गहन पड़ताल करें, जो आपको समझ आयी हो। उन पर सोच विचार करें तथा अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
***बांटे।*** (समूह के सदस्यों द्वारा दो मिनट विचार करने तथा उन विचारों को लिखने के बाद, उन विचारों को बारी बारी आपस में बांटें) आइयें हम आपस में बारी बारी बांटे कि हमें क्या प्राप्त हुआ है।
(लोगों द्वारा खोजी गयी बातों को बांटने के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है। याद रखें के प्रत्येक लघु समूह के लोग अलग बातों को बांट सकते हैं, यह जरूरी नहीं है कि सभी सदस्यों द्वारा बाँटे गयें विचार एक ही समान हों।

### खोज 1. परमेश्वर किस प्रकार से एक अति कठिन परिस्थिति को सुसमाचार के निमित्त विजय में बदल देगा।

इस अनुच्छेद में पाये जाने वाले शब्द 'लेकिन' को लिखें।

**परन्तु परमेश्वर बन्द द्वार को खोलता है।**

प्रेरितों 5:12-20 में हम पढते हैं कि सुसमाचार के दुश्मन प्रेरितों को बन्दीगृह में डाल देते हैं। ऐसा लगता है कि दुश्मनों की विजय हो गयी तथा प्रेरित आगे सुसमाचार प्रचार नहीं कर पाए।
लेकिन हम 19 पद में देखते हैं कि परमेश्वर एक कठिन परिस्थिति को विजय में बदल देते हैं। " परन्तु रात का प्रभु के स्वर्गदूत ने बन्दीगृह के द्वारा खोल दिये।" शत्रु प्रेरितों को सुसमाचार प्रचार करने से नहीं रोक सके। कितनी विपरीत परिस्थिति है। शत्रुओं ने प्रेरितों को बन्दीगृह में डाल दिया लेकिन परमेश्वर ने बन्दीगृह का द्वार खोन दिया। प्रकाशितवाक्य 3:7-8 पढ़ें।

**परन्तु परमेश्वर उन्हें फिर से शिक्षा देने के लिए भेजता है।**

प्रेरितों 5:21-26 में हम देखते हैं कि सुसमाचार के शत्रुओं ने भरी सभा में प्रेरिता पर आरोप लगाए। उन्होने सिन्हेदिन को इकट्ठा कर दिया। सिन्हेद्रिन यहूदियों के बीच सर्वोच्च अधिकारी हुआ करते थे, उनके पास धार्मिक और कानूनी अधिकार हुआ करते थे, विशेषतौर पर धार्मिक मामलों में। वे किसी भी व्यक्ति को गम्भीर से गम्भीर सज़ा दे सकते थे। सम्भवत: प्रेरितों पर भी प्रारम्भिक कार्यवाही हो सकती थी। ऐसा प्रतीत होता था कि महायाजक प्रेरितों को उसी दिन खत्म कर देगें। लेकिन, पद 22 में हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने एक कठिन परिस्थिति को किस तरह से विजय में तबदील कर दिया। ''परन्तु प्यादों ने वहां पहुंचकर उन्हें बन्दीगृह में न पाया।" बन्दीगृह के दरवाज़े बन्द ही थे और पहरे दार भी वहां ही खड़े हुए थे। लेकिन फिर भी बन्दी बन्दीगृह से गायब हो गये। उनके पास कोई भी नहीं था जिसे वे अदालत में पेश कर सकें। सिन्हेद्रिन दुविधा में पड़ गया। उसी बीच किसी व्यक्ति ने आकर सूचना दी कि प्रेरित तो मनिदर में खड़े होकर, सबको उपदेश दे रहे हैं। कितना विपरीत काम है। शत्रुओं न प्रेरितों के खिलाफ अदालत में मुकदमा चलाने की तैयारी की थी, परन्तु परमेश्वर ने उन्हे ठीक मन्दिर में खड़ा करके प्रचार करवाया।

**परन्तु परमेश्वर ने उन्हें गवाही देने का हियाव दिया**

प्रेरितों 5:27-32 में हम पढ़ते हैं कि उस देश के प्रमुख अधिकारी जो वास्तव में सुसमाचार के शत्रु थे,प्रेरितों पर उनकी पहली आज्ञा का उल्लंघन करने का आरोप लगाने लगे अर्थात यीशु के नाम से प्रचार न करना। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि वे लोगों के सामने यहूदी अगुवों को लज्जित करवाना चाहते हैं।
लेकिन हम देखते हैं कि परमेश्वर ने 29वें वचन में परमेश्वर ने कठिन परिस्थितियों को किस प्रकार विजय में परिवर्तित कर दिया। प्रेरितों ने उत्तर दिया "मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा पालन करना ही हमारा कर्तव्य है।" परमेश्वर ने उन्हें सुसमाचार प्रचार करने का आदेश दिया था और किसी के पास भी परमेश्वर की आज्ञा का विरोध करने का अधिकार नहीं है। उन्होंने सिन्हेद्रिन तक को सुसमाचार सुना दिया। उन्होंने उन्हें,यीशु मसीह की मृत्यु तथा उसके पुनरूत्थान तथा पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिए पश्चाताप करने की आवश्यकता का सुसमाचार सुना दिया। उन्होने कहा कि जो कोई परमेश्वर की

आज्ञा मानेगा परमेश्वर उसके मन में अपनी आत्मा का वरदान देगा। कितनी विपरीत परिस्थिति है। शत्रु उन पर आरोप लगा रहे व उनको धमका रहे थे,लेकिन परमेश्वर ने प्रेरितों को इतना हियाव दिया कि वे अपने शत्रुओं का भी सुसमाचार सुनाने लगे।

**परमेश्वर ने उनके शत्रुओं को उनका समर्थक बना दिया।**

प्रेरितों 5:33-39 में हम पढ़ते हैं कि बहुत से शत्रु बहुत अधिक नाराज़ हो गये और वे प्रेरितों को नाश करना चाहते थे। ऐसा प्रतीत होता था कि शत्रु प्रेरितों पर पत्थरवाह करने की तैयारी कर रहे थे।

लेकिन पुन: हम 34 पद में पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने किस प्रकार कठिन परिस्थिति को विजय में तबदील कर दिया। "लेकिन गमलीएल नामक फरीसी ने हस्तक्षेप किया"। उसने शत्रुओं को यह कहते हुए जल्दबाजी न करने की चेतावनी दी कि कहीं ऐसा न हो कि वे अनजाने में परमेश्वर का ही विरोध करने लगें। कितनी उलट परिस्थिति है। शत्रु प्रेरितों को मारना चाहते थे लेकिन सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने उसके शत्रुओं में से ही एक को बुरी योजना बनाने से रोक दिया(नीतिवचन 16:7)।

**लेकिन परमेश्वर के लोग लगातार परमेश्वर की बाता को मानते रहे।**

प्रेरितों 5:40-42 में हम देखते हैं कि शत्रुओं ने प्रेरितों को दण्ड दिया और चिताया कि वे आगे को यीशु मसीह के नाम से प्रचार न करें। फिर से ऐसा प्रतीत होता है कि ये अधिकारी गण यीशु मसीह के नाम से प्रचार को रोकने में कामयाब हो जाएगें।

लेकिन 41 पद में हम देखते हैं कि परमेश्वर कैसे इन कठिन परिस्थितियों को विजय में बदल देते हैं। प्रेरितों ने बड़ें आनन्द के साथ दण्ड स्वीकार कर दिया तथा वे लगातार मनुष्य की बातें न मानकर परमेश्वर की आज्ञा पूरी करते रहे। वे न केवल मन्दिरों के भीतर वरन महासभाओं में भी खड़े होकर प्रचार करने लगे। क्या उलट परिस्थिति है। शत्रु एक तरफ लगातार सुसमाचार की शिक्षाओं का विरोध कर रहे थे,लेकिन परमेश्वर के लोग लगातार परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए हर जगह सुसमाचार प्रचार करते रहे।

---

**5:29**

## खोज 2. परमेश्वर सर्वश्रेष्ठ अधिकारी है।

"मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा पालन करना ही हमारा कर्तव्य है।" कई बार मेरे मन में संसार के सर्वोच्च अधिकारी को लेकर प्रश्न उठते हैं, मुझे समझ नहीं आता कि धरती पर सर्वोच्च अधिकार किसका है? प्रेरितों 5:29 मेरा जवाब ह; धरती पर सर्वोच्च अधिकार परमेश्वर का है। वह दुनिया के सारे अधिकारों से सर्वोपरी है। इस सच्चाई के कारण मुझे इस संसार में व्यवहार करने के सन्दर्भ में निर्णय लेते समय सहायता मिलती है, खासतौर पर जब सुसमाचार प्रचार करने का सवाल सामने हो तो।

| कदम 3 प्रश्न | व्याख्या |
|---|---|
| ***ध्यान दें:*** आप इस समूह से इस अनुच्छेद क आधार पर किस विषय पर प्रश्न पूछना पसन्द करेंगे? आईये हम प्रेरितों के काम 5:12-42 को पढ़कर समझने की कोशिश करते हैं आर फिर भी जो बातें समझ न आएं उनके लिए प्रश्न पूछे। | |
| ***लेखा ले:*** सबसे पहले एक स्पष्ट प्रश्न को तैयार कर लें। फिर उस प्रश्न को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। | |
| **बाटे** (समूह द्वारा दो मिनट तक सोच विचार करने तथा अपने विचार लिखने के पश्चात, प्रत्येक सदस्य अपने प्रश्न को अन्य सदस्यों के साथ बांटे) | |
| ***चर्चा करें:*** (इसके पश्चात कुछ प्रश्नों का चुनाव करने के बाद, समूह में चर्चा करने के द्वारा उन प्रश्नों का जवाब देने का प्रयास करें। (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले सम्भावित प्रश्नों व चर्चाओं के उदहारण दिए गये है) | |

**ध्यान दें:** इस अनुच्छेद को निम्न तरीकों से अनुवाद किया जा सकता है।

"अन्य विश्वासी परमेश्वर के साथ आकर जुड़ गये, जिसमें स्त्री व पुरूषों की बढ़ी भीड़ शामिल थी, जो अपने साथ बीमारों को इस आशय से साथ ले आये..... कि तब पतरस उनके पास से होकर गुजरे तो उसकी परछाई बीमारों पर गिर जाए।"

इस बात का लोगों के अंधविश्वास से कोई लेना देना नहीं था, बल्कि यह उनके यीशु मसीह व परमेश्वर के चमत्कारों पर विश्वास का वर्णन है। यह विश्वास में अगुवाई करने वाला चमत्कार नहीं था बल्कि उनके विश्वास के द्वारा ही उनके जीवन में चमत्कार हुए थे।

ऐसी घटनाएं पहले भी हुई थीं। एक बार एक स्त्री ने यीशु के वस्त्र के छोर को छुआ था और वह चंगी हो गयी थी(मरकुस 5: 27-30)। गन्नेसरत में, उन क्षेत्रों में लोगों ने बीमारों को लाकर बाज़ारों में रख दिया और यीशु से निवेदन किया कि वे उन्हें केवल अपने वस्त्रों को ही छूने दे। और जितने लोगों ने उसके वस्त्रों को छुआ वे सब चंगे हो गये(मरकुस 6:55-56)। एक रोमी सुबेदार का विश्वास था कि यीशु मसीह व्यक्तिगत तौर पर मौजूद हुए बिना भी उसके दास को चंगा कर सकते हैं(मत्ती 8:8-10)। यह घटना यीशु मसीह पर लोगों के विश्वास का ठोस प्रमाण है।

इसी प्रकार परमेश्वर को यह भाया कि प्रेरित पतरस की छाया से भी ठीक ऐसे ही चमत्कार हों(प्रेरितों 5:16)। इसी प्रकार, परमेश्वर को यह भाया कि लोग प्ररित पौलुस के अंगोछ के छोर को छुए व उसके रूमाल के स्पर्श से बीमार चंगे हों तथा दुष्टात्माएं भाग जाएं(प्रेरितों 19:11-12)। प्रेरितों द्वारा किये जा रहे चमत्कार लोगों के विश्वास का प्रमाण थे, प्रेरितों के विश्वास का नहीं। लोगों ने प्रेरितों द्वारा प्रचार किये गये सुसमाचार पर विश्वास किया, जिसकी वजह से उनके मन में बीमारों को चंगाई दिलाने के लिए प्रेरितों के पास लाने का विश्वास जागा। यीशु मसीह के लिए यह महत्वपूर्ण नहीं है कि परमेश्वर ने लोगों को किस उपाय से अर्थात, शब्दों के द्वारा, चिन्हों के द्वारा, लोगों को चंगा किया, क्योंकि उसके पास स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार है।

---

5:29

## प्रश्न 2. सारे मानवीय अधिकारों की क्या सीमा है?

**ध्यान दें.** जब पतरस कहता है, "मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा पालन करना ही हमारा कर्तव्य है।" तो क्या इसका मतलब यह है कि हम मसीहियों को संसार में रहते हुए सदैव सरकार के नियमों को उल्लंघन करना चाहिए? नहीं, बाइबल के अनुसार सात ऐसे अधिकार हैं जिसके प्रति हमें अधीन रहना है। मसीहियों को इन अधिकारियों के अधीन रहना चाहिए। संसार का कोई अधिकारी सिद्ध नहीं है। केवल परमेश्वर के पास ही सम्पूर्ण अधिकार है। और परमेश्वर ने ही अपने अधिकार के कुछ खण्ड को जगत के कुछ अधिकारियों के हाथों में सौंपा है। ये अगुवे या लोग जिन्हे अधिकार दिया गया है अपने सारे कार्यों के लिए परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी व जिम्मेदार हैं। बाइबल में दर्शाये गये वे अधिकारिक रिश्ते निम्नलिखित है:

### 1. परमेश्वर व मनुष्य

परमेश्वर का सम्पूर्ण मानवजाति तथा धरती की सभी चीज़ों पर पूरा अधिकार है। याकूब 4:7 में लिखा है, "परमेश्वर के अधीन हो जाओ"। सारे लोगों को परमेश्वर के अधीन हो जाना चाहिए। इसके अलावा सारे अधिकारियों या जिन्हे परमेश्वर ने अधिकार सौंपा है उन्हें परमेश्वर के अधीन आ जाना चाहिए। परमेश्वर ने मनुष्यों को अपनी ही महिमा के लिए बनाया है(यशायाह 43:7;कुलुस्सियों 1:15-17)। परमेश्वर चाहते हैं कि सारे लोग उसे जाने, उससे प्रेम करें, उसकी बातें मानें तथा उसकी सेवा करें। मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा मकसद परमेश्वर की महिमा करना है।

### 2. मानव व सृष्टि

परमेश्वर ने मनुष्यों को धरती पर सोमित अधिकार प्रदान किया है। भजन संहिता 8:4,6 में लिखा है"मनुष्य क्या है जो उसके बारे में विचार करें?...तू ने उसे अपने हाथों के कार्यों पर प्रभुता दी है; तूने उसके पावों तले सब कुछ कर दिया है।" परमेश्वर ने मनुष्य को उसकी सृष्टि की देखभाल करने की जिम्मेदारो सौंपी है, लेकिन पृथ्वी पर मनुष्यों का अधिकार सीमित है। लोग परमेश्वर की सृष्टि के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकते। उदाहरण के लिए, व्यवस्था विवरण 20:19 में लिखा है, "उसके वृक्षों पर कुल्हाड़ी चलाकर उसे नष्ट न करना, क्योंकि उनके फल तेरे खाने के काम आएंगे। मनुष्य को परमेश्वर की सृष्टि का नाश करने की आज्ञा नहीं है। (यहेजकेल 34:18-19)

### 3. पति व पत्नि का रिश्ता

परमेश्वर ने एक दूसरे की सेवा करने के लिए स्त्री व पुरूष दोनों को सीमित अधिकार प्रदान किये हैं। लेकिन उनके सेवा करने का तरीका फरक है: पुरूष को अपनी पत्नी की अगुवाई करनी चाहिए तथा पत्नी को अपने पति के अधीन रहने के द्वारा सेवा करनी चाहिएर। कुलु. 3:18 में लिखा है,"हे पत्नियों, जैसा प्रभु में उचित है, वैसा हो अपने अपने पति के अधीन रहो।" लेकिन पति के अधिकारों को भी सीमित किया गया है क्योंकि कुलुस्सियों 3:19 में लिखा है कि,"हे पतियों अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो, और उनसे कठोरता न करो। एक पति को प्रेम सज्जनता तथा सेवा भाव में ही अपने अधिकारों को इस्तेमाल करना चाहिए। याद रखें परमेश्वर ने विवाह की बुनियाद रखी है और परमेश्वर ने ही पति व पत्नी के सम्बन्ध को बनाया है। जिसे परमेश्वर ने बनाया है उसे बदलने का अधिकार किसी धर्म या अधिकारी को नहीं है।

### 4. अभिभावक व बच्चे

परमेश्वर ने अभिभावकों को अपने बच्चों पर कुछ अधिकार दिये हैं। कुलुस्सियों 3:20 में लिखा है, "हे बालको,सब बातों में अपने अपने माता पिता की आज्ञा का पालन करो, क्योंकि प्रभु इस से प्रसन्न होता है।" लेकिन माता पिता का अधिकार भी सीमित किया गया है; क्योंकि कुलुस्सियों 3:21 में लिखा है" हे बच्चेवालों अपने बालकों को तंग न करो, न हो कि उनका साहस टूट जाए। माता पिता को अपने बच्चों के प्रति अधिकारों का इस्तेमाल कुछ इस प्रकार से करना चाहिए जिससे वे उत्साहित हों, जरूरत पड़े तो अनुशासन का तरीका अपनाएं (नीतिवचन 13:24)! परमेश्वर ने हमेशा माता पिता व बच्चों के बीच सम्बन्ध बनाकर रखा है। आधुनिक लोगों, संस्कृतियों, शिक्षा प्रणाली, को परमेश्वर द्वारा बनायी किसी चीज़ को बदलने का अधिकार नहीं है।

### 5. राजअधिकारियों व नागरिकों के बीच सम्बन्ध

परमेश्वर ने राजनेताओं तथा देश की कानून व्यवस्था को बनाये रखने वालों को आम नागरिकों पर कुछ अधिकार प्रदान किये हैं। 1 पतरस 2:13-14 में लिखा है "प्रभु के लिए मनुष्यों को ठहराये हुए हर एक प्रबन्ध के अधीन रहो,राजा के इसलिए क्योंकि वह सब पर प्रधान है...हाकिमों के इसलिए क्योंकि वह कुकर्मियों को दण्ड देने और सुकर्मियों की प्रशंसा के लिए भेजे गये हैं। मसीहियों को अपने देश के नियमों का पालन करना चाहिए। लेकिन हाकिमों व अधिकारियों के अधिकार को सीमित किया गया है। क्योंकि प्रेरितों के काम 5:29 में लिखा है कि "मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा पालन करना ही हमारा कर्तव्य है।" चाहे अधिकारी गण कितने भी ऊँचे पद पर आसीन हो लेकिन यदि वे परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध हम से कुछ मांग करत हैं तो हम मसीहियों को तमीज़ से उनका सामना करना चाहिए।

### 6. मालिक व नौकर के बीच रिश्ता

परमेश्वर ने मालिकों को अपने कार्यकर्ताओं पर सीमित अधिकार दिया है। कुलुस्सियों 3:22 में लिखा है " हे सेवकों, जो शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं,सब बातों में उनको आज्ञापालन करो।" लेकिन शारीरिक स्वामियों का अधिकार भी सीमित किया गया है। क्योंकि कुलुस्सियों 4:1 में लिखा है "हे स्वामियों अपने अपने दासों के साथ न्याय और ठीक ठीक व्यवहार करो, यह समझकर कि स्वर्ग में तुम्हारा भी एक स्वामी है।" हर एक स्वामी को यह ध्यान में रखना चाहिए कि परमेश्वर उसका स्वामी है, और एक दिन जिस प्रकार से उसने अपने सेवक को दण्ड दिया है उसी प्रकार वह भी उसे दण्ड देगा। यह आपका स्वामी परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध आपसे कोई मांग करता है, तो मसीहियों को सज्जनता के साथ उनकी माँग का विरोध करना चाहिए।

### 7. आत्मिक अगुवों व विश्वासियों के बीच सम्बन्ध

परमेश्वर ने मण्डली के अगुवों को मण्डली पर सीमित अधिकार प्रदान किये हैं। थिस्लुनिकियों 5:12" जो प्रभु में तुम्हारे अगुवे हैं और तुम्हें शिक्षा देते हैं उनका सम्मान करो।" लेकिन मण्डली के अगुवों के अधिकारों को भी सीमित किया गया है, क्योंकि मत्ती 20:25-28 तथा 1 पतरस 5:1-4 में लिखा है कि अगुवे उनके हाथों में सौंपे गये विश्वासियों पर प्रभुता न करें। सारे अगुवे अगुवाई करें, लेकिन उन पर हुक्म चलाते हुए नहीं वरन, व्यक्तिगत उदाहरण तथा सौंपे गये लोगों की सेवा करते हुए।

5:32

## प्रश्न 3. प्रेरित गण खास तौर पर किन बातों के साक्षी थे?

**ध्यान दें।** प्रेरितों को यीशु द्वारा विशेष तौर पर यीशु का ही गवाह होने के लिए बुलाया गया था (प्रेरितों 1:8) न कि चर्च संगठन, किसी मसीही संस्था या किसी मसीही अनुभव का प्रचार करने के लिए। मसीहीयत के इतिहास में शैतान ने मसीहीयों की गवाही के विषय को यीशु मसीह से हटाकर अपन लोगों के स्वार्थी लक्ष्यों या किसी व्यक्ति विशेष की लालसाओं में बदलने का प्रयास किया है। झूठी गवाहियों से सावधान रहें।

प्रेरित शिष्यों के उस प्रथम समूह का हिस्सा थे जो यीशु की सेवकाई के आरम्भ से लेकर यीशु के साथ हर जगह मौजूद रहा करते थे। इसी कारण वे यीशु के जीवन,मृत्यु व पुनरूत्थान के प्रथम गवाह थ (प्रेरितों 1:21-22) वे यहूदी व रोमी अधिकारियों के सामने यीशु पर चले मुकद्दमों के गवाह थे। वे गवाह थे कि किस प्रकार यहूदी हाकिमों ने यीशु को मृत्यु दण्ड दिया था! वे इस बाते के गवाह थे कि किस तरह यहूदियों ने दुष्ट रोमी अधिकारियों का इस्तेमाल क्रूस की मृत्यु देने के लिए किया था (प्रेरितों 2:23; 5:30)। वे परमेश्वर द्वारा यीशु को मृतकों में से जीवित करवाने के गवाह थे (प्रेरितों 2:32)। वे इस बात के भी गवाह थे कि किस प्रकार परमेश्वर ने उसे स्वर्ग में उठाने के द्वारा अपने सीधे हाथ पर विराजमान होने का अधिकार किस प्रकार दिया (प्रेरितों 5:31)। इसके अलावा पवित्र आत्मा भी मसीहियों की मण्डलियों के बीच में यीशु मसीह की गवाही देता व उसकी महिमा करता है (यूहन्ना 16:14)!

अत: मसीहियों को गवाही देते समय अपनी स्वार्थी जरूरतों या लालसाओं की गवाही नहीं देनी चाहिए, वरन यीशु मसीह के गवाह बनना चाहिए।

## कदम 4. उपयोग इस्तेमाल

***ध्यान दे:*** इस अनुच्छेद में प्राप्त सच्चाईयों में से मसीही लोग सम्भवत: किन का इस्तेमाल कर सकते हैं?

**बांटे व लेखा रखें:** आईये हम प्रेरितों के काम 5: 12-42 के आधार पर एक दूसरें के साथ विचार विर्मश करें, और जो कार्य सम्भव है उनकी सूचि बनाएं।

***ध्यान दें:*** किस सम्भव सच्चाई विषय में परमेश्वर चाहते हैं कि आप उसे अपने निज जीवन में प्रयोग करें?

***लिखें:*** इस अभ्यास को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को नि:संकोच दूसरों के साथ बाँटे। (याद रखें कि प्रत्येक समूह भिन्न सत्य का प्रयोग करेगा, और हो सकता है कि वह एक ही सच्चाई को अलग तरीके से इस्तेमाल करं। सम्भावित प्रयोगों की सूची निम्नलिखित है)

## 1. प्रेरितों 5:12-42 से कुछ सम्भावित प्रयोगों के उदहारण ।

5:12-अपने नगर में विश्वासी होने के नाते आपस में मिलें।

5:18-अपेक्षा करें कि सम्भवत: आपको भी गिरफ्तार करके जेल में डाला जा सकता है।

5:19 -अपेक्षा करें कि परमेश्वर आपके लिए भी जेल के दरवाज़े खोल देगा।

5:20 लोगों को नये जीवन का पूरा संदेश सुनाएं।

5:28-29 जब सरकारी अधिकारी आपको आपके काम बन्द करने का आदेश दें या आपसे उन कामों को करने के लिए कहें जिन्हे परमेश्वर मना करते हैं, तो उनसे विनम्रता के साथ कह दें कि मसीहियों का कर्त्तव्य मनुष्य की बात मानने से बढ़कर परमेश्वर की बात मानना है (मत्ती 10:17-20)।

5:40 -अपक्षा करें कि आपको भी लोगों को यीशु के बारे में बताने के कारण पीटा जा सकता है।

5:41 जब परमेश्वर आपको उसके नाम के कारण निन्दा या सताव सहने योग्य समझे तो आनन्दित होना।

5:42 यीशु ही मसीह है, यह शिक्षा देना कभी बन्द न करें।

## 2. प्रेरितों 5:12-42 के आधार पर व्यक्तिगत कार्यों का उदाहरण

मैं "अधिकारियों-अधीनों" के बीच सात सम्बन्धों को याद रखना चाहता हूँ। मैं बाइबल द्वारा निर्धारित सीमाओं के आधार पर ही अपने अधिकारियों का इस्तेमाल करूंगा। उदाहरण के लिए मैं एक आदर्श बनके तथा लोगों की सेवा करने के द्वारा मसीहियों की अगुवाई करना चाहता हं, हुकुम चलाकर नहीं।

मैं प्रेरितों की हिम्मत व परमेश्वर की श्रेष्ठता को देखकर अति प्रभावित हूँ। जब कभी सुसमाचार के दुश्मनों ने प्रेरितों का प्रचार रोकने का प्रयास किया, परमेश्वर ने खुद हस्तक्षेप करके सुसमाचार प्रचार करने में उनकी सहायता की। कोई भी चीज़ मसीहियों को संसार के सारे देशों में प्रचार करने से नहीं रोक सकती, क्योंकि परमेश्वर स्वयं उनके लिए युद्ध कर रहा है। मैं उनके उदाहरण का अनुसरण करना चाहता हूँ।

---

**कदम 5. प्रार्थना** **प्रतिउत्तर**

आइये हम उन सच्चाईयों के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें प्रेरितों के काम 5: 12-42 में सिखाई हैं।
(जिन बातों को आपने अपने अध्ययन के दौरान सीखा उनका प्रार्थना के द्वारा प्रतिउत्तर दें। एक या दो वाक्यों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। याद रखें कि लोग अलग अलग समूहों में अलग मुद्दों पर प्रार्थना करेंगे।)

| 5 | **प्रार्थना** (8 मिनट) | *[ प्रतिक्रियाएं ]*<br>**दूसरों के लिए प्रार्थना करें** |
|---|---|---|

दो या तीन के समूह में होकर प्रार्थना करते रहें। एक दूसरे तथा संसार के सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें।

| 6 | **तैयारी** (2 मिनट) | **[ निर्धारित कार्य ]**<br>**अगले अध्याय के लिए** |
|---|---|---|

***समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ प्रेरितों के काम 5: 12-42 के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: उत्पत्ति 20:1-23:20 के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. याद करें। पाप का दण्ड: सभोपदेशक 12:14 । रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।